

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN, PATIALA

भारत का एक सुप्रसिद्ध हिन्दी
कृषि समाचार-पत्र (न्यूज़ पेपर)

www.khetiduniyan.in



BOOK POST – PRINTED MATTER

KHETI DUNIYAN

• Issue Dated 07-09-2024 • Vol. 8 No. 36 • H.O. : KD Complex, Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) Ph. : 0175-2214575 • Page : 08 E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

अब सोलन में दोबारा महकने लगे सेब के बगीचे

अलीं रैड वन, सकारलैट स्पर व गेल गाला को सफलतापूर्वक उगाया

ग्लोबल वार्मिंग के कारण प्रदेश में सेब की पट्टी साल दर साल ऊंचाई वाले क्षेत्रों की ओर खिसक रही है। प्रदेश के शीत मरुस्थल कहे जाने वाले ताबों में उच्च गुणवत्ता का सेब पैदा हो रहा है। ऐसे में कम



ऊंचाई वाली किस्मों से कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सेब के बगीचे दोबारा से महकने लगे हैं।

ग्लोबल वार्मिंग के चलते सोलन में सेब की पैदावार न के बराबर रह गई थी। वर्तमान में सोलन जिला में करीब 70 हैक्टेयर भूमि पर ही सेब उगाया जा रहा है। यहां सेब उत्पादन बागवानों के लिए घाटे का सौदा साबित हो रहा था, ऐसे में कृषि विज्ञान केंद्र सोलन ने कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों के लिए सेब की नई

में इस बार सूखे के बावजूद अच्छी पैदावार मिली। इससे अब कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में सेब की बागवानी हो सकेगी।

सेब से है हिमाचल की पहचान हिमाचल को सेब राज्य भी कहते हैं। हिमाचल के बागवानों ने उत्तम फल गुणवत्ता में एक विशेष पहचान बनाई है। अभी तक अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में ही सेब उत्पादन हो रहा था, लेकिन सेब में लो

शेष पृष्ठ 6 पर



किसान मेले

फरीदकोट

10 सितम्बर

गुरदासपुर

18 सितम्बर

रौणी (पटियाला)

24 सितम्बर

बठिण्डा

27 सितम्बर

पी.ए.यू. कैम्पस, लुधियाना

13 से 14 सितम्बर, 2024

खेती दुनिया द्वारा इन मेलों पर स्टाल लगाए जाएंगे और नई मैंबरशिप हेतु बुकिंग की जाएगी।

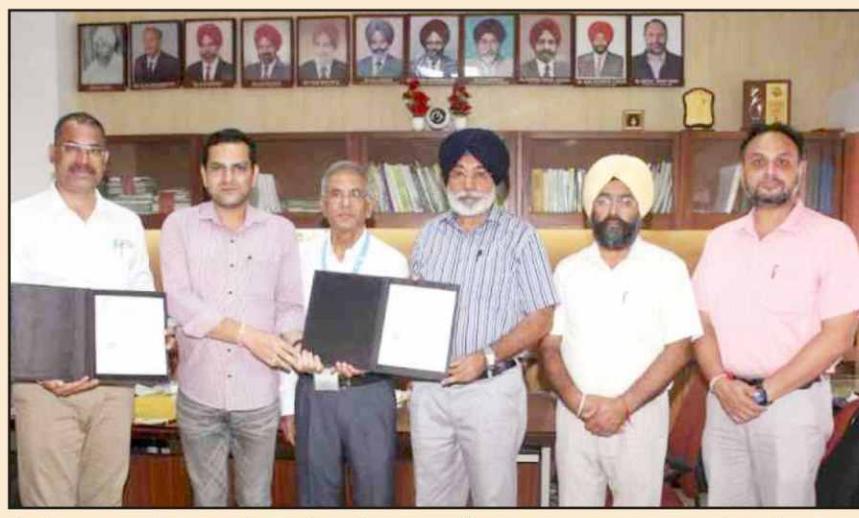
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

16 से 17 सितम्बर, 2024

जई की दोहरी किस्म ओ.एल.-16 देती है प्रति एकड़ 90 किंवंटल चारा पी.ए.यू. और आंध्र प्रदेश की कम्पनी के बीच लाइसेंस के लिए करार

लुधियाना स्थित पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (पी.ए.यू.) ने दोहरी प्रकार की ओट (जई) किस्म ओ.एल.-16 के लाइसेंस के लिए आंध्र प्रदेश स्थित गॉरमेट पॉपकॉर्निका एल.एल.पी. के साथ एक समझौता किया। खोज निदेशक डॉ. अजमेर सिंह दत्त और गॉरमेट पॉपकॉर्निका एल.एल.पी. के राकेश अरोड़ा ने उनके संबंधित संगठनों की ओर से करार पर हस्ताक्षर किए। इस किस्म से प्रति एकड़ औसतन लगभग 90 किंवंटल हरा चारा प्राप्त होता है और इसकी पुनर्जीवित फसल पकने पर औसतन 7.6 किंवंटल प्रति एकड़ अनाज देती है।

इस अवसर पर पी.ए.यू. के अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक (कृषि) डॉ. जी.एस. मांगट और गॉरमेट पॉपकॉर्निका के उपाध्यक्ष रमेश चौधरी एन.वी.वी. भी उपस्थित थे। स्लांट ब्रीडिंग विभाग के सीरियर फॉरेज ब्रीडर डॉ. राहुल कपूर ने कहा कि यह जई की पहली



दोहरी प्रकार की किस्म है, जिसे वर्ष 2022 के दौरान पंजाब के सिंचित क्षेत्रों के लिए विकसित और जारी किया गया था। इसका

पौधा मध्य ऊंचाई वाला होता है, जिसके चौड़े पत्ते होते हैं। इसमें प्रचुर चारा, अनाज और आटे की गुणवत्ता भी अच्छी है। इससे

प्रति एकड़ औसतन लगभग 90 किंवंटल हरा चारा प्राप्त होता है। चारे के लिए इसकी पहली कटाई बुवाई के 65-70 दिन बाद की जा सकती है। इसकी पुनर्जीवित फसल, पारिषक्त होने पर औसतन 7.6 किंवंटल प्रति एकड़ अनाज की उपज देती है।

स्लांट ब्रीडिंग विभाग के प्रमुख डॉ. वी.एस. सोहू ने पी.ए.यू. द्वारा विकसित किस्म के प्रसार की जिम्मेदारी संज्ञा करने के लिए वैज्ञानिकों के साथ-साथ फर्म को भी बधाई दी।

टैक्नोलॉजी मार्केटिंग और आई.पी.आर. सेल के एसोसिएट डायरेक्टर डॉ. खुशदीप धरनी ने कहा कि पी.ए.यू. व्यवसायीकरण की प्रक्रिया के जरिये अपनी किस्मों और प्रौद्योगिकीय का जनता तक प्रसार सुनिश्चित कर रहा है। पी.ए.यू. द्वारा विकसित जई की किस्में बाजारों में भी लोकप्रिय हो रही हैं।

वर्ष 2023 की बाढ़ पर तीन विज्ञानिकों डॉ. प्रभज्योत कौर सिंह संधू व डॉ. सिमरजीत कौर की स्टडी बाढ़ से 2800 करोड़ का अतिरिक्त बोझ, लेकिन कम्यूनिटी नसरी ने बनाई राह - 4 प्रतिशत अधिक पैदावार

पिछले साल जुलाई-अगस्त महीनों में पंजाब के कई हिस्सों में आई भीषण बाढ़ से फसलें बर्बाद हो गई थीं। कम्यूनिटी नसरी की बढ़ावत यहां के जोशीले किसानों ने अपने खेतों में दोबारा लहलहाती फसलों से भरकर दिखा दिया और नतीजतन, प्रति हैक्टेयर औसत पैदावार 260 किलोग्राम रही, जो 4 फीसदी अधिक है।

- 20 सालों में पंजाब और हिमाचल में हुई कम बारिश • स्टडी में बाढ़ प्रभावित इलाकों के लिए सुझाया कम्यूनिटी नसरी का तरीका

गया। रिपोर्ट के अनुसार इस बाढ़ के कारण पंजाब में दोबारा खेती के लिए आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ा, जिसमें किसानों को धान की दोबारा खेती के लिए लेबर का खर्च 8750 रुपए प्रति हैक्टेयर, अपने ट्रैक्टर से खेत

संधू और डॉ. सिमरजीत कौर ने की। उनके अनुसार खराब जलवायु से समुदाय को और अधिक नुकसान होने की उम्मीद है, क्योंकि अनुपान है कि वर्ष 2050 तक पंजाब में मक्के की पैदावार 13 प्रतिशत, कपास की पैदावार 11 प्रतिशत और चावल की पैदावार लगभग 1 प्रतिशत कम हो जाएगी। पी.ए.यू. में कृषि मौसम विज्ञान की विज्ञानी डॉ. प्रभज्योत कौर के अनुसार जलवायु परिवर्तन लगातार हो रहे हैं। ऐसे में नए तरीके अपनाने की जरूरत है। कम्यूनिटी नसरी और धान नसरी के उपायों से उन जगहों में मदद मिल सकती है, जहां अकसर बाढ़ आती है।

पी.ए.यू. की इस स्टडी को कलीन एयर पंजाब की स्टेट कॉऑफिनिटर परिणीता सिंह ने मूल्यांकित किया। इनके मुताबिक, हमारे राज्य की कृषि उत्पादकता राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा के

लिए महत्वपूर्ण है और विविध, जलवायु-अनुकूल प्रथाओं को हमें अपनाना होगा।

के.वी.के. व रिसर्च सेंटरों में तैयार की धान की पनीरी

बाढ़ के दौरान 2 लाख हैक्टेयर की फसल वाला इलाका प्रभावित हुआ। ऐसे में पी.ए.यू. ने कम्यूनिटी नसरी स्थापित की, जिसमें जरूरतमंद किसानों के लिए धान की पनीरी उन इलाकों में तैयार की गई, जहां जगह और पानी की उपलब्धता थी। इसमें कृषि विज्ञान केन्द्रों (के.वी.के.) और रिसर्च सेंटरों में पी.आर.-126 और पूसा बासमती-1509 की मदद से फिर से खेती की गई और उस साल (2023) धान की खेती 3.19 मिलियन हैक्टेयर में हुई, जबकि 2022 में यह 3.17 मिलियन हैक्टेयर में ही हुई थी। बाढ़ के कारण भी राज्य में औसत पैदावार 260 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर रही थी, जो 4 फीसदी अधिक ही।



पंजाब एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी (पी.ए.यू.) ने हाल ही में पंजाब बाढ़-2023 के कारण, प्रभाव और सीख की रिपोर्ट जारी की। इसमें पंजाब ही नहीं, बल्कि हिमाचल प्रदेश में भी 2023 के दौरान बदले वारिश के पैटर्न और हिमाचल में भारी बरसात के कारण मैदानी इलाकों में बढ़े पानी के चलते फसलों, इंफ्रास्ट्रक्चर और पशुधन की हुई तबाही को भी इस स्टडी में शामिल किया

जोतने पर 2500 रुपए प्रति हैक्टेयर और खरपतवारनाशक के लिए 1000 रुपए प्रति हैक्टेयर का खर्च आया। इसके चलते राज्य में दो लाख हैक्टेयर के क्षेत्र के हिसाब से 245 करोड़ रुपए का अतिरिक्त खर्च किसानों को उठाना पड़ा, जबकि बाढ़ के कारण प्रभावित क्षेत्र में 13 लाख टन के उत्पादन का नुकसान मिला कर 2800 करोड़ रुपए का खर्च उठाना पड़ा। पी.ए.यू. की यह स्टडी टीन विज्ञानियों डॉ. प्रभज्योत कौर सिंह, डॉ. संदीप सिंह

हिमाचल की चार दिनों की बारिश पंजाब में लाई थी तबाही

स्टडी के अनुसार वर्ष 2023 में पंजाब में जून में 54.5 एम.एम. की बजाय 65.9 एम.एम. और जुलाई में 161.4 की जगह 231.3 एम.एम. बारिश हुई थी, जो 20.9 फीसदी और 43.3 फीसदी ज्यादा रही थी। हालांकि, सीज़न में 438.8 एम.एम. की जगह 416.7 एम.एम. बारिश हुई, जो 5 फीसदी कम रही थी। रिपोर्ट के अनुसार, पंजाब और हिमाचल में पिछले 20 सालों में सामान्य से कम बारिश होती रही, लेकिन वर्ष 2023 में इस पैटर्न में बदलाव आया। हिमाचल प्रदेश में जून में 19.4 फीसदी ज्यादा, जुलाई में 75.1 फीसदी ज्यादा, अगस्त में 4 फीसदी कम, सितम्बर के 42.2 फीसदी कम और सीज़न की बारिश 20.5 फीसदी ज्यादा हुई। हालांकि, हिमाचल प्रदेश में बारिश 7 जुलाई से 11 जुलाई के बीच अधिकतम रही, जो इन चार दिनों के भीतर सामान्य से 436 प्रतिशत अधिक थी। इसी बरसात के चलते भाखड़ा और पोंग बांध में बढ़े जल स्तर के कारण फ्लॅट गेट खोले गए थे। नतीजतन, पंजाब में आई बाढ़ से भारी नुकसान उठाना पड़ा था।

बायोफोर्टिफाइड अनाज रोजमर्मा का खाना ही बनेगा खजाना पोषण का

नरेन्द्र शर्मा

फसलों से महंगी बिकती है। जहां तक दुनिया की पहली बायोफोर्टिफाइड फसल की बात है, तो यह साल 2007 में युगांडा में उगाई गई विटामिन ए से भरपूर नारंगी शकरकंद थी। हालांकि कुछ लोगों का मानना है कि भारत में साल 1999 में ही गोल्डन राइस को बायोफोर्टिफाइड फसल के रूप में विकसित कर

प्रतिबद्धता बताया गया था।

भूख, कुपोषण से जंग में मददगार

भारत की यह बड़ी सफलता इसलिए है; क्योंकि एक तरफ जहां हम दुनिया की सर्वाधिक उपजाऊ भूमि के स्वामी होने के कारण खाद्यान्न उत्पादन के मामले में दुनिया के शीर्ष देशों में शामिल हैं, वही हम दुनिया में सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला होने के कारण ग्लोबल हंगर में आई बाढ़ से भारी नुकसान उठाना पड़ा था।



लिया था, मगर इसे दुनिया के सामने पेश नहीं किया गया था। लेकिन 16 अक्टूबर 2020 को यानी विश्व खाद्य दिवस के मौके पर दुनिया के समक्ष भारत द्वारा विकसित आठ फसलों की 17 बायो-फोर्टिफाइड (जैव सुदृढ़) किस्में जारी की गई थीं। इस उपलब्धि को खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ कुपोषण को जड़ से समाप्त करने के प्रति भारत की

इंडेक्स में साल 2022 में 107वें स्थान पर थे, यानी पाकिस्तान, नेपाल और बांग्लादेश से भी नीचे। जाहिर है हमारी भूख और इस कुपोषण से बायोफोर्टिफाइड फसलें ही जंग लड़ सकती हैं। क्योंकि ये बायोफोर्टिफाइड फसलें ही हैं, जो हमारी आबादी की भूख मिटाएंगी। साथ ही विटामिन बी-1, विटामिन बी-6, विटामिन ई, नियासिन, आयरन, बी-2, विटामिन बी-12 आदि से भरपूर होने के कारण हमें स्वस्थ भी बनायेंगी।

जिंक, फोलिड एसिड, विटामिन बी-12 आदि से भरपूर होने के कारण हमें स्वस्थ भी बनायेंगी। क्योंकि स्वस्थ जीवन जीने के लिए पेट में सिर्फ अनाज का पहुंचना ही जरूरी नहीं है, इस अनाज का विभिन्न विटामिनों और मिनरल्स से भी भरपूर होना जरूरी है। इसीलिए देश के कृषि वैज्ञानिकों ने कुपोषण के खिलाफ इस लड़ाई में अहम् जिम्मेदारियां संभाल रखी हैं।

मोटे अनाजों की भी बढ़ी ताकत

साल 2023 में इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स मनाया गया। यह इसलिए महत्वपूर्ण था, क्योंकि मोटे अनाज पोषण की खाना होते हैं। इसलिए कुपोषण के खिलाफ जंग में मोटे बायोफोर्टिफाइड मोटे अनाज बहुत महत्वपूर्ण है। गौरतलब है कि बाजार में ज्वार और रागी की भी बायोफोर्टिफाइड किस्में मौजूद हैं। इनमें आयरन और जिंक की मात्रा कुदरती मात्रा से बढ़ाई गई है। सामान्य बाजार में 50 से 60 पी.पी.एम. तक ही आयरन की मात्रा होती है, जबकि बाजारे की बायोफोर्टिफाइड किस्म में 80 पी.पी.एम. तक आयरन होता है। अगर लोग बायोफोर्टिफाइड अनाज का सेवन करते हैं, तो उन्हें शरीर में आयरन और कैल्शियम की मात्रा बढ़ाने के लिए अलग से दवाओं की आवश्यकता नहीं पड़ती। हालांकि कुछ लोग संदेह जताते हैं कि गलत है। ये फसलें पूरी तरह से कुदरती होती हैं। दरअसल, इन फसलों के बीज मिट्टी से लक्षित पोषक तत्व ज्यादा ग्रहण कर लेते हैं। इस तरह देखें तो बायोफोर्टिफाइड फसलें पूरी तरह से प्राकृतिक हैं। वही इनका सेवन भी सुरक्षित है।

देश में सभी लोगों को पर्याप्त व पोषक आहार मुहैया करवाने के मकसद से कुछ सालों में अनाजों की बायोफोर्टिफाइड अनाजों की बढ़ावत करने की मुहिम जारी है। पारम्परिक फसलों में विटामिन, मिनरल्स, प्रोटीन और वसा की मात्रा जैव तकनीक के जरिये बढ़ाई जाती है, जैसे आयरन व प्रोटीन और विटामिन ए, फोलिक एसिड व आयरन वाला गोल्डन राइस व उन्नत बाजार। यानी रोजमर्मा का खाना ही सेहत का खजाना बनेगा।

खाद्य और कृषि संगठन (एफ.एओ.) की साल 2022-23 की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में 19.44 करोड़ लोग यानी जनसंख्या का करीब 14.5 फीसदी कुपोषित थे। भारत में कुपोषण की पुष्टि वैश्विक भुखमरी सूचकांक भी करता है, जिसकी साल 2022 की रिपोर्ट में भारत 121 देशों में से 107वें स्थान पर था। वहीं भारत में बच्चों में कुपोषण की दर दुनिया में सबसे ज्यादा है। कम वज़न वाले बच्चों के मामले में भारत दुनिया में पहले स्थान पर हैं।

गौरतलब है कि भरत में लगभग 74 फीसदी आबादी स्वस्थ आहार ग्रहण करने में असमर्थ है, जबकि 39 फीसदी तो पर्याप्त पोषक तत्व प्राप्त करने में भी असमर्थ है। बहुत से लोगों की बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं जैसे टीकाकरण, प्रसवपूर्व देखभाल या संक्रमण के उपचार तक

सब्जियों में बैंगन का प्रमुख स्थान है। बैंगन हिमाचल प्रदेश के किसानों की आमदनी का प्रमुख साधन है। कीटों तथा रोगों के आक्रमण से बैंगन के उत्पादन में काफी कमी आ जाती है। यह कीट व रोग सब्ज़ी उत्पाद की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं। बैंगन में हानि पहुंचाने वाले प्रमुख हानिकारक कीटों व रोगों तथा उनके प्रबंधन के बारे में यहां बताया गया है।

1. बैंगन का तना एवं फल छेदक कीट : इस कीट की सुण्डियां



हल्के गुलाबी रंग की, जिनका सिर पीले रंग का तथा लम्बाई 20 मिलीमीटर होती है। आरम्भिक अवस्था में सुण्डी तने के ऊपरी भाग में छेद करके अन्दर घुसकर हानि पहुंचाती है, जिससे तने का ऊपरी भाग सूख जाता है तथा कीट ग्रसित तना मुरझा कर नीचे की ओर झुक जाता है। फल आने की अवस्था में इस कीट की सुण्डियां फलों में बारीक छेद करके अन्दर चली जाती हैं और बैंगन के गुदे पर निर्वाह करती हैं। फलों पर इस कीट के प्रकोप का पता केवल आखिरी अवस्था में ही लगता है, जब सुण्डियां फलों के बाहर निकलने के लिए छेद करती हैं।

प्रबन्धन : प्रभावित फलों एवं शाखाओं को नष्ट कर दो। कीट प्रकोप के लक्षण नज़र आते ही 3 मिलीलीटर अजाड़िरैकिटन 1 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। पौधों पर प्रकोप होने पर 1 ग्राम डायाफैनथाइयुरोन 50 डब्ल्यू.पी. या 0.8 मिलीलीटर लैम्बडा-साइहैलोथ्रिन 5 ई.सी. या 0.4 ग्राम इमामैकिटन बैन्जोएट 5 एस.जी. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। प्रकोप रहने पर 15 दिन के अंतराल पर पुनः छिड़काव करें।

2. बैंगन का हुइड़ा : यह कीट ताप्ते या सन्तरी रंग का अर्धवृत्ताकार तथा इसके पंखों पर



काले रंग की लगभग 14 बिन्दियां होती हैं। कीट के अण्डे पीले रंग के तथा शिशु भी पीले रंग के कंधीनुमा बाल वाले होते हैं। इस कीट के प्रौढ़ तथा शिशु पत्तों को खाकर जाली बना देते हैं। शिशु कीट पीले रंग के तथा शरीर पर कांटे लिए होते हैं। यह कीट टमाटर, आलू तथा करेले को भी हानि पहुंचाता है।

प्रबन्धन : इस कीट के अण्डों, शिशुओं तथा व्यस्कों को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। प्रकोप अधिक होने पर 0.8 मिलीलीटर लैम्बडा-साइहैलोथ्रिन 5 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। प्रकोप रहने पर 15 दिन के अन्तर पर पुनः छिड़काव करें।

3. सफेद मक्खी : कीट के शिशु पतली झिल्ली की तरह होते हैं, जो पत्तों की निचली सतह से कोशिकाओं का रस चूसते रहते हैं। व्यस्क कीट सफेद रंग की छोटी सी मक्खी के आकार के होते हैं, जो पत्तों की निचली

बैंगन की फसल में कीट तथा रोग प्रबन्धन

डॉ. प्रेम चन्द्र शर्मा, प्राध्यापक, अभिलाषी विश्वविद्यालय, चैलचौक, ज़िला मण्डी-175028 (हिमाचल प्रदेश)

सतह पर ही रहते हैं। शिशु व व्यस्क दोनों ही पत्तों से रस चूसते हैं, जिसके कारण पत्ते पीले पड़ जाते हैं और सूख जाते हैं। यह कीट चिपचिपा पदार्थ भी छोड़ते हैं, जिस पर काली फफूंदी लगने से पौधों की प्रकाश संश्लेषण क्रिया कम हो जाती है। इस कीट के प्रकोप से पौधों की बढ़ोत्तरी रुक जाती है तथा उपज में कमी आ जाती है। यह कीट विषाणु



रोग भी फैलाते हैं, जिससे फसल को काफी नुकसान होता है।

प्रबन्धन : प्रौढ़ मक्खियों को आकर्षित करने के लिए पीले चिपकने वाले ट्रैप का प्रयोग करें। रोपाई से पहले नरसरी में 3 मिलीलीटर अजाड़िरैकिटन 1 प्रतिशत प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। पौधों पर प्रकोप होने पर 1 ग्राम डायाफैनथाइयुरोन 50 डब्ल्यू.पी. या 1 मिलीलीटर मैलाथियॉन 50 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। किसी भी कीटनाशक का लगातार दो बार से अधिक प्रयोग न करें।

4. लाल माइट : इसका प्रकोप गर्म एवं शुष्क वातावरण में अधिक होता है। लाल माइट के पृष्ठ भाग पर प्रायः दो गाढ़े रंग के धब्बे होते हैं। ये धब्बे माइट के शरीर के अन्दर के खाद्य पदार्थ के होते हैं, जोकि बाहर झलकते हैं। माइट के शिशु एवं व्यस्क दोनों ही पौधों के विभिन्न भागों से रस चूसते हैं, जिस कारण पौधे का हरा भाग नष्ट हो जाता है। पत्तों पर पहले सुई की नोक जैसे छोटे-छोटे हल्के सफेद पीले रंग के धब्बे पड़ जाते हैं। अधिक प्रकोप होने पर माइट पौधों पर रेशमी जाला बना लेती है एवं उस जाले में अण्डे व माइट की सभी व्यवस्थाएं पाई जाती हैं। इन जालों से प्रकाश संश्लेषण किया पर बुरा प्रभाव पड़ता है। प्रभावित पौधे कमज़ोर पड़ जाते हैं और पैदावार में कमी आ जाती है। फल छोटे लगते हैं और उनकी गुणवत्ता में भी कमी आ जाती है।

प्रबन्धन : पौधों पर इस माइट के लक्षण दिखाई देने पर 1 मिलीलीटर मैलाथियॉन 50 ई.सी. या 0.5 मिलीलीटर फैनाजाक्वीन 10 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोल कर 7 से 10 दिनों के अंतराल या 3-5 व्यस्क माइट प्रति पत्ता दिखाई देने पर छिड़काव करें।

5. जैसिड : इस कीट के शिशु एवं व्यस्क पत्तियों की निचली सतह से कोशिकाओं का रस चूसते रहते हैं। इस कीट के प्रबन्धन के लिए 2 मिलीलीटर मैलाथियॉन 50 ई.सी. प्रति लीटर पानी में घोल कर कीट आक्रमण के लक्षण दिखाई देते ही छिड़काव करें।

3. सफेद मक्खी : कीट के शिशु पतली झिल्ली की तरह होते हैं, जो पत्तों की निचली सतह पर चिपके रहते हैं। व्यस्क कीट सफेद रंग की छोटी सी मक्खी के आकार के होते हैं, जो पत्तों की निचली

रोग :

कमरतोड़ रोग : पौध बीज



सेनिकलते तथा बाद में भूमि पर गिर जाती है। क्यारियों को 5 लीटर फार्मालिन प्रति 100 लीटर पानी से रोपाई के 15-20 दिन पहले शोधित करें। बीज तभी बीजें तब मिट्टी में इसकी गन्ध आने बन्द हो जाए।

क्यारियों को 25 ग्राम मैन्कोजेब या 5 ग्राम कार्बन्डाजिम प्रति 10 लीटर पानी के घोल से रोग के लक्षण देखते ही सीचें।

फाइटोपथोरा फल सड़न :

यह रोग फोमाप्सिस वैक्सान्स नामक फफूंद द्वारा पैदा होता है। इस रोग का आक्रमण पौधे के सभी ऊपरी भागों पर होता है। नरसरी में पौधे के कोमल तनों पर आक्रमण होने पर पौध मर जाती है। पत्तों पर भूरे अथवा स्लेटी रंग के गोलाकार मृत 1 सैटीमीटर तक के धब्बे बनते हैं, जिनके किनारे गहरे भूरे रंग के होते हैं। फलों पर धब्बे बड़े आकार के बनते हैं, जोकि शुरू में नर्म जलासिकत होते हैं और बाद में काले तथा सख्त हो जाते हैं। रोग

* स्वस्थ रोग मुक्त प्रमाणित बीज का प्रयोग करें।

* बीज का उपचार 50 डिग्री

COPL

आपकी फसल की सुरक्षा ... कोपल के साथ



Ph. : 9592064102

www.coplgroup.org

E-mail : info@coplgroup.org

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN

मुख्य कार्यालय

के.डी. कॉम्प्लैक्स, गौशाला रोड, नजदीक शेरे पंजाब मार्केट, पटियाला - 147001 (पंजाब)

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

वर्ष : 08 अंक : 36
तिथि : 07-09-2024

सम्पादक

जगप्रीत सिंह

मुख्य शाखाएं

पटियाला

फोन : 0175-2214575

मो. 90410-14575

मुम्बई

दिल्ली

लुधियाना

बठिंडा

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग

डॉ. जे.एस. डाल

डॉ. आर.एम. फुलझेले

कम्पोजिंग

एकता कम्प्यूटरज़ पटियाला

सितम्बर माह का पहला सप्ताह खत्म होने की तरफ बढ़ रहा है, लेकिन देशभर के मौनसून पर नज़र दौड़ाएं तो लगता है कि जैसे अभी धुर जुलाई का मध्य हो। मंगलवार को आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, मध्य प्रदेश और राजस्थान सहित 23 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में बारिश का अलर्ट जारी किया। देश के इन्हें बढ़े भू-भाग के लिए बारिश का अलर्ट तो बाकी सालों में जुलाई और अगस्त में भी नहीं जारी होता था, जितना बड़ा अलर्ट इस साल सितम्बर के पहले गुजरते सप्ताह के उत्तरार्ध में जारी हो रहा है। वह अलर्ट भी सिर्फ कुछ घंटों के लिए नहीं है, बल्कि

कब विदा होगा यह आफत का मौनसून

बन जाता है। बाढ़ सिर्फ लोगों और उनके माल-असवाब को ही नहीं डुबाती, बल्कि अपने पीछे पानी से होने वाली बीमारियों की फौज लेकर भी आती है। बाढ़ और भू-स्खलन की समस्या हमेशा परेशान करती रही है।

के उत्पादन पर भी इसका फर्क पड़ेगा। आमतौर पर मौनसून जून की शुरुआत में शुरू होता है और सितम्बर के मध्य तक खत्म हो जाता है। लेकिन इस साल अभी भी बुरे होने वाले हैं, क्योंकि



अगले 24 घंटों से लेकर तीन दिनों तक के लिए है। मसलन आई.एम.डी. के मुताबिक गुजरात के लिए अगले 3 दिनों में भारी बारिश की आशंका है। लेकिन सबसे बुरी हालत तो आंध्र प्रदेश और तेलंगाना की बनी हुई है। गुजरे 2 सितम्बर, 2024 को तेलंगाना सरकार ने कहा कि बारिश और बाढ़ से राज्य को कुल 5438 करोड़ रुपए का नुकसान अब तक हो चुका है।

सरकार के मुताबिक इस आफत की बारिश के कारण अब तक 110 रिलाफ कैप बनाए गए हैं, जिनमें 4000 से ज्यादा लोग शरण लिए हुए हैं। पिछले कई दशकों में ऐसी आफतनाक बारिश नहीं हुई। आंध्र प्रदेश और गुजरात का भी यही हाल है। आंध्र प्रदेश में जहां एस.डी.आर.एफ. की 20 और एन.डी.आर.एफ. की 19 टीमें तैनात हैं, वही गुजरात में इस समय 10 नदियां और 130 से ज्यादा जलाशय खतरे के निशान के ऊपर से उफान रहे हैं। आंध्र प्रदेश में करीब 5 लाख लोग बारिश और बाढ़ से सीधे प्रभावित हैं।

गुंटूर, कृष्णा, विजयवाड़ा, एन.टी.आर., एलुरु, पालनाडु, बापटला और प्रकाशम में हालात पानी-पानी है। पूरे विजयवाड़ा में पिछले 24 घंटे से ज्यादा समय तक बिजली गुल रही, अभी भी हालात

मौसम वैज्ञानिकों को मौनसून के देर तक बने रहने की आशंका है। वैज्ञानिकों को यह आशंका 30 अगस्त, 2024 को गुजरात के आसमान में देखे गए डीप डिप्रैशन हुई है। क्योंकि जब भी इस मौसम में लो प्रैशर बनता हुआ दीखता है, तो इसका मतलब होता है, इस बार मौनसून की विदाई अनुमान से कहीं ज्यादा देर से होने वाली है। इसका मतलब यह है कि इस साल वह पूरे सितम्बर भी रह सकता है, और इसके आगे भी जा सकता है। बारिश ने किस कदर देश के कई हिस्सों में जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है, इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि गुजरात और राजस्थान जहां आमतौर पर एक दशक पहले तक बहुत कम बारिश होती थी, वहीं इस साल इन दोनों प्रदेशों में अब तक ज्यादातर जगहों में 400 से 550 एम.एम. तक बारिश हो चुकी है। फिर भी बारिश अभी जाने का नाम नहीं ले रही।

वैज्ञानिकों को आशंका है कि अगर मौनसून का यह दौर सितम्बर के अंत तक या इससे आगे भी जाता है, तो खरीफ की फसलों का बहुत ज्यादा नुकसान हो सकता है। चावल, कपास, सोयाबीन, मक्का और कई तरह की दालें, ये वे फसलें हैं, जो आमतौर पर मध्य सितम्बर के आस-पास तक काटी जाती हैं, तो वह इंसान का हत्यारा

तक मौसम के जो लक्षण दिख रहे हैं, उससे तो यही लगता है कि बारिश का यह दौर अक्तूबर मध्य तक जाने वाला है। देश में हर साल बाढ़ आती है और कम से कम हर साल औसतन 75 लाख हैक्टेयर ज़मीन इससे प्रभावित होती थी। इस साल प्रभावित होने वाली ज़मीन करीब 95 लाख हैक्टेयर तक पहुंच गई है। ध्यान रखिए देश में कुल कृषि योग्य भूमि 1.82 करोड़ हैक्टेयर है, जिसका मतलब यह हुआ कि लगभग आधी कृषि योग्य भूमि इससे प्रभावित है। फसलों, मकानों और जन सुविधाओं के लिहाज से करीब 2 से 2.

5 हजार करोड़ रुपये का नुकसान होता था। जबकि इस साल तो करीब साढ़े पांच हजार करोड़ रुपये का नुकसान तो अकेले तेलंगाना में ही हो चुका है, इसलिए अनुमान लगाया जा सकता है कि पूरे देश का नुकसान कितना होगा।

इसी तरह बाढ़ से हर साल आमतौर पर 1600 से 2000 लोगों की मौत हो जाती है। इस साल मौत के इस आंकड़े के 2500 से 3000 तक पहुंचने की आशंका है। बाढ़ से बिजली, पानी और गैस की आपूर्ति की समस्या के बारे में तो कुछ न कहा जाए, वही ठीक है। वास्तव में जब भी कोई मौसम एक सीमा के बाहर चला जाता है, तो वह इंसान का हत्यारा

की त्रासदी केरल में देखी गई, हाल के सालों में वैसी कही और नहीं देखी गई। पिछले दस सालों में इस इलाके में चार से ज्यादा बार भू-स्खलन की बड़ी दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। बावजूद इसके न तो सरकार ने और न ही इस इलाके में बार-बार इमारतें खड़ी करने वालों ने सोचा कि भू-स्खलन की समस्या का काई स्थायी समाधान हुए बिना वो कैसे बेफिर हो सकते हैं?

इस साल अगर पूरे सितम्बर बारिश हुई और यह अक्तूबर के पहले सप्ताह तक भी खिंची, तो भारत की अर्थव्यवस्था की वार्षिक विकास दर का जो अनुमान विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष जैसी एजेंसियों द्वारा 7 से 8 फीसदी के बीच लगाया गया है, वह कहीं घट कर 5 से 6 फीसदी के बीच ना आ जाए। और अगर ऐसा होता है, तो खाद्यान्न उत्पादन में तो कमी आएगी ही, 8 से 10 लाख नौकरियों का भी पता साफ होगा। लब्बोलुआब यह है कि जिस तरह से मौनसून कुंडली मार कर बैठ गया है और फिलहाल अपने तुरन्त जाने के कोई लक्षण प्रकट नहीं कर रहा, उसके चलते अगर 15 सितम्बर के बाद 20 दिन भी मौनसून और खिंचता है, तो कई लाख करोड़ का नुकसान होगा।



देविंदर शर्मा
कृषि एवं खाद्य विशेषज्ञ

इसे 'पेशन सुधार' बताया जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि एकीकृत पेशन योजना (यूपीएस) सरकारी कर्मचारियों के लिए सम्मान और वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करती है। उन्होंने कहा 'हमें उन सभी सरकारी कर्मचारियों की कड़ी मेहनत पर गर्व है जो राष्ट्रीय प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।' वास्तव में, यूपीएस, जो प्राप्त अंतिम वेतन के 50 प्रतिशत के बराबर पेशन का आश्वासन देता है। स्वीकारोक्ति है कि पहले बाली और बाजार नीत महंगाई से जुड़ी न्यू पेशन स्कीम (एनपीएस) सरकारी कर्मचारियों के लिए कागर नहीं रही। सरकारी कर्मचारियों के लिए 'परिभाषित लाभ' सुनिश्चित करने के लिए, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पेशन योजना में बदलाव किया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सेवानिवृत्त कर्मचारियों को बाजार नीत अत्याचार (महंगाई) का सामना न करना पड़े।

हालांकि, प्रधानमंत्री ने कई मौकों पर देश के किसानों की सराहना की है और अक्सर कृषक समुदाय द्वारा प्रदर्शित लचीलोपन की प्रशंसा की है, लेकिन लंबे वक्त से चली आ रही गारंटीशुदा कीमत की मांग पर विचार करने में कोई भी इच्छुक नहीं है। अगर सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए बाजार नीत महंगाई से निपटना मुश्किल हो रहा है, तो स्पष्ट कर दें कि बाजार नीत महंगाई किसान के लिए भी उतनी ही बड़ी समस्या है। अगर कर्मचारियों को एक सुनिश्चित पेशन की जरूरत पड़ती है, तो किसान को भी सुनिश्चित कीमत की जरूरत है। दुनिया में कहीं भी बाजार ने किसानों के लिए उच्च आय सुनिश्चित नहीं की है। प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में, या तो सब्सिडी देकर आय में घटे की भरपाई की जाती है (चीन कृषि सब्सिडी प्रदान करने में शीर्ष पर उभरा है) या फिर कृषि को अपनी सुविधानुसार बाजार की ताकतों के रहमों-करम पर छोड़ दिया जाता है, मसलन, भारत में।

जैसा कि कुछ अध्ययनों से पता चला है, निष्कर्ष के बाल यह है कि भारतीय किसान आय पिरामिड के निचले स्तर पर है, बल्कि पिछले लगभग 25 वर्षों से वे हर साल घटा उठा रहे हैं। किसानों को कभी खत्म न होने वाली गरीबी से बाहर निकालने का एकमात्र कागर ढंग है कृषि कीमतों की गारंटी कानूनी रूप से बाध्यकारी तंत्र बनाकर सुनिश्चित करना। परंतु इसकी परवाह न करते हुए, एनडीए सरकार ने कुछ साल पहले सुप्रीम कोर्ट में पेश एक शपथपत्र में कहा कि न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) गारंटी देने वाला कानून बाजार में 'बिगाड़ ला देगा'। अजीब बात यह है कि जब किसानों की बात आती है, तो नीति निर्माता 'बाजार में बिगाड़' का वास्ता देकर और सुनिश्चित कृषि कीमतों से महंगाई पर आगे असर का हौवा खड़ा कर देते हैं। कर्मचारियों के मामले में

पेशन की भाँति किसान को सुनिश्चित कीमत क्यों नहीं

सुनिश्चित पेशन से किसी को कोई दिक्कत नहीं है, उनके मामले में, 'बाजार में बिगाड़' का डर अचानक गायब हो जाता है।

जब मुख्यधारा के अर्थशास्त्री मानते हैं कि कानून एमएसपी से उपभोक्ता कीमतों बढ़ायी और इस तरह 'बाजार में बिगाड़' होगा, तो वास्तव में, यह कॉर्पोरेट मुनाफे को कम करता है और इसीलिए हो-हल्ला मचता है। अजीब बात यह है कि मुक्त बाजार के हाथी इन अर्थशास्त्रियों की यही नस्ल तब चुप रहती है जब अमेरिका में कॉर्पोरेट अपने उत्पादों को 'मूल्य वृद्धि' करते हैं उपभोक्ताओं को नोच खाने के लिए कीमतों में



बेजा बढ़ोतरी करते हैं। वास्तव में प्रतिबंधित करते हैं। उदाहरणार्थ, न्यूयॉर्क राज्य ने उन कंपनियों के खिलाफ कदम उठाया जिन्होंने महामारी के दौरान हैंड सैनिटाइजर की कीमतों में 400 प्रतिशत की वृद्धि की थी। और

फिर भी, कई बाजार अर्थशास्त्री साफ नजर आने वाली ऐसी बाजार विकृतियों पर अंकुश लगाने के उपर्यों को सोवियत शैली के मूल्य नियंत्रण की ओर वापसी करार देते हैं। बाजार के पक्ष में यह पूर्वाग्रह तब पैदा होता है जब किसानों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान की बारी आए, लेकिन तब नहीं जब कॉर्पोरेट ज्यादा मुनाफा कमाने के लिए कीमतें बढ़ाते हैं। 'बाजार विकृति' पर यह दोगलापन किसानों को जीवनयापन की आय प्रदान करने की राह में अड़चन है। निस्संदेह, किसानों को देय सुनिश्चित कीमत के अनुसार बाजार अपने आप समायोजित हो जाएंगे। यह केवल खास किस्म की विचारधारा ही है, जो अड़ंगा लगा रही है।

अमेरिकी उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने कॉर्पोरेट द्वारा अनाप-शनाप मूल्यवृद्धि पर प्रतिबंध लगाने का आहवान किया है, जो कोविड महामारी के बाद खाद्य और किराना वस्तुओं की कीमतों में आई 53 प्रतिशत वृद्धि शेष पृष्ठ 6 पर

EICHER TRACTORS



पावर | परफॉर्मेंस | स्टाइल एक साथ

TAFE CORPORATE COMMUNICATIONS



पावरफुल
45 hp इंजन

मल्टी स्पीड /
रिवर्स PTO

डिजिटल
इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर

EICHER 485

45 hp रेज

डेयरी उद्योग की सफलता बछड़ा व बछड़ी के उत्तम प्रबंधन पर निर्भर करती है। नवजात वंश का उचित प्रबंधन मृत्यु दर को कम कर सकता है। स्वस्थ बछड़ा ही स्वस्थ और समृद्ध डेयरी फार्म का द्योतक होता है। बछड़े की भविष्य में दुग्ध उत्पादन क्षमता बढ़ाने तथा शरीर को स्वस्थ बनाने के लिए उसे जन्म के समय प्रचुर मात्रा में दी जाने वाली खीस का महत्व पूर्ण योगदान रहता है।

खीस एक गाढ़ा, पीला, स्तन ग्रन्थियों का प्रथम स्त्राव है, जोकि प्रसव के तुरन्त बाद प्राप्त होता है। यह सामान्य दृष्टि की तुलना में 4-5 गुना अधिक विटामिन-ए रखता है। यह कई प्रतिरक्षी, वृद्धि कारकों और आवश्यक पोषक तत्वों के साथ ट्रिप्सिन अवरोधक जैसे कारक भी रखता है। ये अवरोधक कारक खीस में उपस्थित प्रतिपिंड नवजात की आंत में होने वाले पाचन को रोकते हैं और प्रतिपिंड के बिना विघटित हुए इसका आंत द्वारा सीधा अवशोषण हो जाता है।

खीस का महत्व :

1. खीस प्रतिपिंड का प्राथमिक स्रोत है, इसमें प्रतिपिंड पर्याप्त मात्रा में रहती है।

2. खीस में प्रक्रिय अवरोधक होते हैं, जोकि प्रतिपिंड को आंत में विघटित होने से बचाते हैं, जिससे इसका आंत द्वारा सीधा अवशोषक हो जाता है।

3. खीस बछड़ों में दस्त तथा न्यूमोनिया के जोखिम को कम करते हैं।

4. खीस वसा, प्रोटीन, विटामिन्स तथा खनिज का कोन्ट्रिट स्रोत होता है।

5. खीस में अनेक हार्मोन व विकास कारक होते हैं, जोकि बछड़े की वृद्धि व स्वास्थ्य के लिए



नवजात बछड़ों में खीस का महत्व

नरेन्द्र सिंह जादोंन, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष एवं ज्योत्स्ना भट्ट, शत्य पशु-चिकित्सा विभाग, गो.ब. पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर (उत्तराखण्ड)

लाभदायक होते हैं।

खीस बछड़े को कब देना चाहिए? :

जन्म के बाद पहले छंटे के भीतर जितना जल्दी हो सके, बछड़े को खीस पिला देना चाहिए, क्योंकि नवजात बछड़ों की आंतों

2.5-3.0 लीटर या बछड़े के भार के 10 प्रतिशत के बराबर खीस पिलाना चाहिए।

खीस की गुणवत्ता की जांच कैसे करें? :

1. अच्छी गुणवत्ता की खीस में न्यूनतम 50 ग्राम प्रतिरक्षा ग्लोबुलिन प्रति लीटर पाया जाता है।

2. इसका गुणात्मक अनुमान कोलोस्ट्रोमीटर द्वारा किया जाता है।

खीस की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले कारक

1. पशु की आयु : प्रायः बूढ़ी गायों में खीस, अधिक मात्रा में अच्छी गुणवत्ता का पाया जाता है। तीन या अधिक ब्यांत वाली गायों में खीस सामान्यता अच्छी गुणवत्ता का होता है।

2. सूखे की अवधि : तीन सप्ताह से कम सूखे अवधि में प्रतिरक्षा ग्लोबुलिन स्तर ग्रन्थियों में इकट्ठा नहीं हो पाती है। इसलिए सूखी अवधि लम्बी (3 सप्ताह से अधिक)



में उसके जन्म के 24 छंटों तक प्रोटीन के बड़े अणुओं को अवशोषित करने की क्षमता रहती है।

खीस किटनी मात्रा में पिलाएं : जन्म के पहले 6 छंटों में लगभग

शेष पृष्ठ 5 की पेंशन की भाँति किसान को सुनिश्चित कीमत क्यों नहीं

के लिए अकेले जिम्मेदार है। रिपब्लिकनों ने उनके इस रुख को 'कम्प्यूनिस्ट' ठहराया है। दक्षिणपंथी चाहे जो भी कहें, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है, जैसा कि कुछ अर्थशास्त्री भी स्वीकारते हैं कि बेजा मूल्यवृद्धि पर अंकुण अच्छी अर्थव्यवस्था के साथ-साथ अच्छी राजनीति भी है। हैरिस ने उन कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई का वादा किया है जो खाद्य कीमतों को कृत्रिम रूप से ऊंचा रख रही है।

वापस कर्मचारियों की पेंशन पर लौटते हुए, यह देखना दिलचस्प है कि व्यय विभाग इस निर्णय को सही ठहराने के लिए हरसंभव प्रयास कर रहा है, इसे 'राजकोषीय रूप से विवेकपूर्ण' करार देते हुए दावा किया जा रहा है कि 'यह नागरिकों की भावी पीढ़ियों को वित्तीय कठिनाई से बचाएगा'। निश्चित रूप से, कर्मचारियों के लिए सुनिश्चित पेंशन के खिलाफ कोई नहीं है। लेकिन यदि कर्मचारियों को सामाजिक सुरक्षा का आशवासन दिया जा सकता है, तो कोई वजह नहीं है कि किसानों के लिए आर्थिक सुरक्षा का भरोसा न दिया जा सके। वे राष्ट्रीय प्रगति में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं

और उनकी अथक मेहनत की बदौलत ही देश में खाद्य सुरक्षा बनी हुई है। मध्यप्रदेश के मंदसौर जिले के किसान कमलेश पाटीदार ने जब 10 एकड़ में खड़ी अपनी सोयाबीन



की फसल को खुद ही रौद दिया, तो उन्हें यह अहसास नहीं था कि इससे एक 'चेन रिएक्शन' शुरू हो जाएगा। घटना का बीड़ियो वायरल होने के कुछ ही दिनों बाद, कई अन्य दुखी किसानों द्वारा फसल उखाड़ने की खबरें आने लगीं। सोयाबीन की कीमतें

जब तक कि उन्हें मंडी में फसल का भाव चढ़ा हुआ नजर न आने लगे। लेकिन यह जुगत भी कारगर न रही।

सोयाबीन की मौजूदा कीमतें 12 साल पहले के स्तर पर आ गई हैं, लेकिन कृषि पर निर्भर आजीविका के विनाश ने लाखों सोयाबीन किसानों की कीमतों में गिरावट-

होने पर बेहतर खीस प्राप्त होता है।

3. टीकाकरण : रोटा वायरस, ई. कोली तथा गोजातीय वायरल दस्त से टीकाकृत गायों के खीस में प्रतिरक्षा ग्लोबुलिन अधिक पाया जाता है।

4. नस्त : प्रायः अधिक दूध देने वाली गायों में खीस की गुणवत्ता अच्छी नहीं होती है। देशी गायों में संकर या विदेशी गायों की तुलना में अच्छी गुणवत्ता वाली खीस पाई जाती है।

5. गर्भकाल में पशु की पोषण स्थिति भी खीस की उच्च गुणवत्ता को निर्धारित करती है।

6. ब्यांत के समय पशु की

शारीरिक स्थिति और आसान ब्यांत

भी खीस की मात्रा बढ़ाने और गुणवत्ता बढ़ाने में मदद करता है।

खीस का भंडारण

1. बेहतर गुणवत्ता की खीस को ही भंडारित करें।

2. खीस को फ्रिज (-5 डिग्री सेंटीग्रेड) में एक सप्ताह तक ही भंडारित कर सकते हैं तथा डीप फ्रिज (-20 डिग्री सेंटीग्रेड) में करीबन एक साल तक भंडारित किया जा सकता है।

3. भंडारित खीस को पिघलाते समय इसका तापमान 50 डिग्री सेंटीग्रेड से ज्यादा ना हो, अन्यथा प्रतिरक्षा ग्लोबुलिन नष्ट हो सकते हैं।

कृत्रिम खीस का महत्व :

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि किसी कारणवश गाय व्याने के पश्चात् खीस नहीं देती है या गाय की मृत्यु हो जाती है, ऐसी परिस्थिति में आप कोई और गाय आस-पास में ब्याई हो तो उसका खीस पिलाया जा सकता है। अन्यथा बछड़े को कृत्रिम खीस (ताजा दूध 500 मिलीलीटर, 1 अण्डा 55-60 ग्राम, गुनगुना पानी 300 मिलीलीटर और अरंडी का तेल 1-2 चम्पच) घर पर बना कर पिलाना चाहिए। कृत्रिम खीस दिन में तीन बार पिलानी चाहिए।

इस प्रकार उत्तर बताई गई खीस प्रबंधन विधि से नवजात पशुओं की मृत्यु दर को कम कर सकते हैं और भविष्य में होने वाले आर्थिक नुकसान से बचते हुए एक बेहतर उत्पादन वाली डेयरी तैयार कर सकते हैं।

शेष पृष्ठ 1 की

अब सोलन में दोबारा

चीलिंग क्षेत्रों में उपजाने योग्य और लगातार फल देने वाली किस्मों के आने से मध्य ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भी नई आशा का संचार हुआ है। इससे पूर्व किसानों ने रॉयल वे रैड डिलिशियस किस्में लगा रखी थी, जिनमें एक ओर 8 से 10 साल में फसल आती थी और रंग भी बहुत कम आता था। इसके विपरीत नई किस्में 3-4 वर्षों में फल दे देती हैं और रंग भी भरपूर आता है।

कंडाघाट, कसौली व चायल में उगाया जा सकता है सेब

वर्ष 2011 से इन किस्मों में फल आने शुरू हो गए। वैज्ञानिकों के शोध व आकलन से तीन किस्मों अर्ली रैड वन, स्कारलैट स्पर व गेल गाला को सोलन के ऊपरी पहाड़ी क्षेत्रों के लिए मुफीद पाया गया। सोलन के कंडाघाट, चायल, मही क्षेत्र, बाशा, जुब्बड़हट्टी व कसौली आदि क्षेत्रों को इन किस्मों को उगाने के लिए उपयुक्त किया गया। अभी तक कंडाघाट के कई किसानों के खेतों में इन किस्मों को प्रयोगात्मक रूप में लगावाया जा चुका है, जिसके उत्साहवर्धक परिणाम सामने आए हैं। सोलन में वर्ष 1914-15 में रजवाड़ा शाही के समय सबसे पहले सेब लगाए गए थे। इसके बाद वर्ष 1972-73 में सरकारी प्रयासों से लोगों को सेब के पौधों का लगाने के लिए प्रेरित किया। लोगों ने सेब उत्पादन भी शुरू किया, लेकिन विश्वभर में मौसम में बदलाव से हिमाचल प्रदेश भी अछूता नहीं रहा।

के.वी.के. में वर्ष 2009 में लगाई थीं विदेशी किस्में

वर्ष 2009 में कृषि विज्ञान केंद्र कंडाघाट में उद्यान विभाग के माध्यम से विदेशी किस्मों को आयातित किस्में लगाई गई थीं। इसमें अर्ली रैड वन, स्कारलैट स्पर, अ००५८८० स्पर-२, गेल गाला, गिबसन गोल्डन व ग्रैनी स्मिथ किस्मों को यहां लगाया गया। इन किस्मों को यहां 1300 मीटर की ऊंचाई में सफलतापूर्वक उगाए जाने से सोलन में सेब उगाने की संभावनाएं बढ़ी हैं। इन किस्मों में फसल भी जल्दी आती है और उनमें हर वर्ष फल लगाने की क्षमता है। अभी तक कंडाघाट के कई किसानों के खेतों में इन किस्मों को प्रयोगात्मक रूप में लगावाया जा चुका है, जिसके उत्साहवर्धक परिणाम स

हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने पर्यावरण, बन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय से आनुवंशिक रूप से संशोधित (जीएम) फसलों पर एक राष्ट्रीय नीति तैयार करने को कहा है। पिछले दो दशकों से संशयवादी जीएम फसलों की देश में आमद को रोकने में सफल रहे हैं, और संभावना है कि वे इसका विरोध जारी रखेंगे। पिछले

अमरजीत भुल्लर

सप्ताह, 18 राज्यों के फार्म यूनियन नेताओं ने जीएम फसलों और इसके पर्यावरणीय प्रभाव, वस्तु-व्यापार, कृषि विविधता, और मानव एवं पशु स्वास्थ्य पर इसके संभावित प्रभावों को लेकर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में जीएम फसलों के विरोध में सभी एकमत थे।

भारत पहले ही जीएम जैव के संबंध में एक उचित और स्वीकार्य नीति बनाने में जूझ रहा है। यूरोपीय संघ (ईयू) ने अपने सदस्य देशों में जीएम उत्पादों/बीजों के प्रवेश को प्रतिबंधित करने के लिए लंबे समय से संघर्ष किया है। ईयू जीएम जैव पर एक अपेक्षाकृत अच्छी नीति बनाने में सक्षम रहा है (हालांकि यह पूरी तरह से सही नहीं है), और यह भारत के लिए एक सबक हो सकता है। कृषि विकास का इतिहास हमें बताता है कि दुनिया ने अब तक तीन 'हरित क्रांतियां' देखी हैं। पहली हरित क्रांति की शुरुआत 1930 के दशक में यूरोप और उत्तरी अमेरिका



जीएम फसलों पर यूरोपीय अनुभवों के सबक

प्रतिबंध लगाए हैं, जबकि अमेरिका, कनाडा, अर्जेंटीना और ब्राजील ने अधिकांश कृषि-जैव प्रौद्योगिकी के उपयोग की अनुमति दी है। भारत सहित अधिकांश अन्य देश सही रास्ता खोजने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।



में हुई। इसमें उर्वरक, कीटनाशक, फसल प्रजातियां, मशीनरी और कृषि प्रबंधन में सुधार शामिल था, जिसके परिणामस्वरूप मक्का और अन्य तापमान-जलवायु पर आधारित फसलों की उपज में तेजी से वृद्धि हुई। दूसरी हरित क्रांति 1960 और 1970 के दशकों में आई, जिसमें कृषि भारतीय राज्य भी शामिल थे। इस क्रांति ने विकासशील देशों और गर्म इलाकों में उगाई जाने वाली फसलों के लिए समान तकनीकें उपलब्ध कराई, लेकिन इन तकनीकों को स्वदेशी अनुसंधान और विस्तार नेटवर्क के माध्यम से स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलित किया गया।

जीएम उत्पाद, विशेषकर कृषि में आनुवंशिक इंजीनियरिंग का उपयोग करके बने बीज, 1970 के दशक में प्रकट हुए और 1990 के दशक से मुख्यतः उत्तरी अमेरिका में इनका व्यवसायीकरण किया गया। इस तकनीक के समर्थकों का दावा है कि इससे कृषि उत्पादकता में भारी वृद्धि होगी और खाद्य आपूर्ति में गुणात्मक सुधार होगा।

पहली दो हरित क्रांतियों और तीसरी हरित क्रांति के बीच सबसे बड़ा अंतर यह है कि तीसरी क्रांति को उत्तरी निर्णायिकता के साथ अपनाया नहीं गया। मानव, पशु और पौधों पर जीएम प्रौद्योगिकी के दीर्घकालिक स्वास्थ्य प्रभावों के बारे में संदेह बना हुआ है। यूरोपीय संघ के देशों में, उत्पाद को सुरक्षित माना

भारत पहले ही जीएम जैव के संबंध में एक उचित और स्वीकार्य नीति बनाने में जूझ रहा है। यूरोपीय संघ (ईयू) ने अपने सदस्य देशों में जीएम उत्पादों/बीजों के प्रवेश को प्रतिबंधित करने के लिए लंबे समय से संघर्ष किया है। ईयू जीएम जैव पर एक अपेक्षाकृत अच्छी नीति बनाने में सक्षम रहा है (हालांकि यह पूरी तरह से सही नहीं है), और यह भारत के लिए एक सबक हो सकता है। कृषि विकास का इतिहास हमें बताता है कि दुनिया ने अब तक तीन 'हरित क्रांतियां' देखी हैं।

जाएगा जब तक कि यह साबित न करने के लिए कई तरकीबें अपनाई हो जाएं कि वह असुरक्षित है। जिसकी शुरुआत 1998-2004 के इसलिए, मुक्त व्यापार व्यवस्था, दौरान जीएम फसल किस्मों के जिसे डब्ल्यूटीओ मान्यता और समर्थन देता है, के तहत यूरोपीय संघ 'ठोस स्थगन' के सबूतों के अभाव में अमेरिका से जीएम बीज या उत्पाद के आयात को प्रतिबंधित नहीं कर सकता। अमेरिकी स्टिकोण से असहमत होते हुए, यूरोपीय संघ ने अपने सदस्य देशों द्वारा जीएम बीज/उत्पादों के आयात को प्रतिबंधित कर रही है। डब्ल्यूटीओ विवाद

निपटान पैनल ने सितंबर 2006 में शिकायतकर्ता देशों के पक्ष में फैसला सुनाया और यूरोपीय संघ को अपनी जीएमओ अनुमोदन प्रक्रिया को डब्ल्यूटीओ नियमों के अनुरूप सुधारने का आदेश दिया। लेकिन डब्ल्यूटीओ के फैसले से पहले ही, यूरोपीय संघ ने अपनी निर्णय-प्रक्रिया को बदल दिया, जो आज भी बहुत जटिल बनी हुई है। जोखिम का आकलन सदस्य देशों के वैज्ञानिक निकायों के साथ गहन परामर्श के बाद किया जाता है। इस राय को सार्वजनिक परामर्श के लिए जनता के समक्ष रखा जाता है। यूरोपीय संघ के नियमों के अनुसार, एक सदस्य देश पर्यावरण या कृषि नीतिगत उत्पादों, शहरी और राष्ट्रीय नियोजन, भूमि उपयोग, और सामाजिक-आर्थिक प्रभाव जैसे कई आधारों पर किसी फसल को न उगाने, निषिद्ध करने, या प्रतिबंधित करने का अधिकार रखता है। परिणामस्वरूप, यूरोप में व्यवसायीकरण के लिए बहुत कम कृषि जैव प्रौद्योगिकी अनुपयोगों को मंजूरी दी गई है।

विश्व व्यापार संगठन के निर्णय और अमेरिकी सरकार के लगातार दबावों के बावजूद, यूरोपीय संघ के सदस्य और अन्य यूरोपीय देश जीएम फसलों और अन्य उत्पादों, विशेष रूप से खाद्य शृंखला में शामिल उत्पादों को आसानी से मंजूरी देने से लगातार बचते रहे हैं। यूरोपीय संघ और अन्य देशों की अनिच्छा ने विश्व व्यापार संगठन और जीएम प्रौद्योगिकी निर्माताओं के दबाव को कमज़ोर कर दिया है। इस दबाव में कमी से भारत अपनी स्वतंत्र राह चुनने के लिए बेहतर स्थिति में है। सर्वोच्च न्यायालय ने जीएम जैविकी पर एक उचित और स्वीकार्य नीति लाने की जिम्मेदारी केंद्र को सौंपकर सही किया है। भारतीय नीति निर्माताओं को यूरोपीय अनुभवों की विवेचना करनी चाहिए। हमने पहले हरित क्रांति तकनीक को स्वीकार किया था, जिसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में जबरदस्त वृद्धि हुई थी, हालांकि इसके साथ कुछ दीर्घकालिक नकारात्मक प्रभाव भी जुड़े थे। इस बार, जहां तक संभव हो, हमें मंजूरी देने से पहले तकनीक के दीर्घकालिक प्रभाव, सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों का सर्वांगीण आकलन करना चाहिए। लेखक यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ ब्रिटिश कॉलेजिया में प्रोफेसर रह चुके हैं।

सोशल मीडिया से सीखी केंचुआ खाद की विधि फिर 1 एकड़ में शुरू किया धंधा, हर माह 20 हज़ार कमाई

जिला पटियाला में पातड़ा से 6 किलोमीटर दूर सेलवाल गांव के किसान हरपाल सिंह इन दिनों केंचुआ (गंडोया) खाद के लिए पटियाला समेत आस-पास के ज़िलों में भी चर्चित है। इस कारोबार को खड़ा करने के पीछे उनकी कहानी बड़ी दिलचस्प है।

वह बताते हैं कि वह कई साल से 10 एकड़ खेती में करते आ रहे हैं। एक दिन मोबाइल इंटरनेट पर जैविक खेती के बारे में देखा और इसके फायदे सुनकर अपने परिवार के बारे में जाना। सोचा कि अपने ही खेतों में इसके लिए 1 एकड़ जमीन में यह खाद तैयार करेंगे। उसके बाद करीब 5 किलो केंचुए लाकर खाद तैयार की, जिसके नीतजे बेहतर रहे। उसने इस खाद का उपयोग अपने खेतों में ही किया। आस-पास के गांवों के लोगों ने उसकी फसल की गुणवत्ता देख कर खाद के बारे में पूछना शुरू किया, तो सोचा कि क्यों न अब इसे कारोबार के रूप में अपना लिया जाए। इसके बाद सोशल मीडिया पर ही केंचुए की खाद तैयार करने की बारीकियां सीखी। 20 बैठ केंचुआ खरीद कर लाए। 1 बैठ में 30 किलो केंचुआ होता है। खेतों में ही खाद को तैयार करने की प्रक्रिया शुरू कर दी।

हरपाल के अनुसार केंचुए से खाद तैयार करने की प्रक्रिया में 90 दिन लग जाते हैं। उन्होंने अपने खेतों में ही यह सारा प्रोजेक्ट लगाया हुआ है। वह गोशाला से गोबर खरीद कर लाते हैं। एक किंवदं गोबर से करीब 60 किलो खाद तैयार हो जाती है। इसके बाद वह मार्केट में इसे 10 रुपए किलो के हिसाब से सेल कर देते हैं। अब वह इस कारोबार से सारे खर्चे निकाल कर तकरीबन 20 हज़ार रुपए महीना कमा रहे हैं।

इंटरनेट के जरिये मार्केटिंग

हरपाल बताते हैं कि वह तैयार खाद को बेचने के लिए अपनी सारी मार्केटिंग सोशल मीडिया पर ही करते हैं। सोशल मीडिया के कई प्लेटफॉर्म पर उन्होंने अपना पेज नारंग ऑर्गेनिक फार्म के नाम से बनाया हुआ है। आलम यह है कि नारंग चलाने वाले या आम लोग किचन गार्डन के लिए उनके यहां आकर खाद खरीद कर ले जाते हैं। जितनी खाद तैयार होती है, उतनी साथ के साथ बिक भी जाती है।

मौनसून प्रभावित करने वाली परिस्थिति सर्दी पर असर डालेगी ला-नीना से मौनसून बेअसर, पर कड़ाके की सर्दी संभव

ला-नीना परिस्थितियां अब मौनसून के आखिरी हफ्ते या इसके खत्म होने पर ही विकसित होंगी। यानी ला-नीना से मौनसून तो बेअसर रहा, पर यदि सर्दियों की शुरुआत से ठीक पहले ला-नीना परिस्थिति बनी, तो दिसम्बर के मध्य से जनवरी तक कड़ाके की सर्दी रहने वाली है। विश्व मौसम संगठन का अनुमान है कि ला-नीना के सितम्बर से नवम्बर के दौरान बनने की 66 फीसदी संभावना है। सर्दी में नवम्बर से जनवरी 2025 तक इसके उत्तरी गोलार्ध में बने रहने के आसार 75 फीसदी से भी अधिक हैं।

फिलहाल पश्चिमी प्रशांत महासागर में सतह का तापमान औसत से अधिक है, जबकि पूर्वी प्रशांत महासागर में औसत के करीब या नीचे बना हुआ है। चूंकि दोनों छोर के तापमान के बीच अंतर शून्य के करीब है, इसलिए एनसो न्यूट्रल (न अलनीनो, न ला-नीना) परिस्थितियां बनी हुई हैं।

ला-नीना परिस्थितियां तब बनती हैं, जब प्रशांत महासागर का पानी ठंडा हो यानी समुद्री सतह का तापमान सामान्य से कम से कम 0.5 डिग्री कम हो।

ला-नीना से बंगाल की खाड़ी में ज्यादा तूफान, जो उत्तरी

भारत में ठंड बढ़ा देते हैं

डॉ. मृत्युंजय महापात्र, महानिदेशक, आई.एम.डी. के अनुसार ला-नीना परिस्थितियां पैदा होने में देरी हुई हैं। इससे मौनसून प्रभावित होने की संभावना नहीं है। ऐसे में इसके सितम्बर से नवम्बर के बीच बनने की संभावना है। अक्टूबर के आखिर से दक्षिणी भारत में उत्तर-पूर्व मौनसून आता है, उस पर इसका असर हो सकता है। ला-नीना वर्ष की खबरी यह भी है कि बंगाल की खाड़ी में समुद्री तूफान की आवृत्ति बढ़ जाती है और उत्तर भारत में कड़ाके की सर्दी पड़ती है।

पंजाब देश का 2 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र, पैदा करता है 14 प्रतिशत शहद

डॉ. ए.एस. अटवाल को देश में इटालियन मधुमक्खी की शुरुआत और स्थापना में योगदान का श्रेय

पंजाब देश के 2 प्रतिशत से कम भौगोलिक क्षेत्र वाले राज्य का नेतृत्व करता है, जो देश का 14.1 प्रतिशत शहद का उत्पादन करता है। इसमें लुधियाना स्थित पंजाब खेतीबाड़ी यूनिवर्सिटी का अहम योगदान है। विगत दिनों भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.), नई दिल्ली की पंचवर्षीय समीक्षा टीम (क्यू.आर.टी.) ने पी.ए.यू. का दौरा किया, जो 2023 में सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान केन्द्र से सम्मानित किया गया था। यह मधुमक्खियों और परागणकों पर अपने अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की प्रगति की समीक्षा करने के लिए गठित एक उच्च स्तरीय टीम है।

एस.के.यू.ए.एस.टी.-जमू में 7 उत्तर भारतीय केन्द्रों की बैठक में विस्तृत चर्चा करने के बाद टीम ने यहां का दौरा किया। 6 सदस्यीय टीम के अध्यक्ष व जाने-माने कौट विज्ञानी डॉ. एच.सी. शर्मा ने, हिमाचल प्रदेश स्थित नौणी (सोलन) में डॉक्टर वाई.एस. परमार यूनिवर्सिटी ऑफ

भारत प्रमुख शहद निर्यातकों में शुमार, पर सालाना खपत गिरी



वर्तमान में भारत लगभग 1,33,200 मीट्रिक टन शहद का उत्पादन करता है। यह आंकड़ा दो साल पुराना है। खैर, भारत दुनिया के 7 प्रमुख शहद निर्यातक देशों में से एक है, जिसने 30 अगस्त 2022 तक अमेरिका, यूनाइटेड अरब अमीरात समेत कई मुल्कों को 74,413 मीट्रिक टन शहद का निर्यात किया था। हालांकि, महामारी के बाद से देश में शहद की प्रति व्यक्ति वार्षिक खपत में काफी गिरावट आई है और विकसित देशों के 3-4 किलोग्राम की तुलना में यह 10 ग्राम पर बनी हुई है।

हॉर्टिकल्चर एंड फॉरेस्ट्री के वाइस चांसलर हैं, विशेष रूप से शहद के 2 मधुमक्खी प्रजनन और छत्ता उत्पादों पर ए.आई.सी.आर.पी. (एचबीएंडपी) के पी.ए.यू. लुधियाना कन्द्र द्वारा की गई पहल की सराहना की।

पी.ए.यू. के वाइस चांसलर डॉ. एस.एस. गोसल ने डॉ. ए.एस. अटवाल के नेतृत्व में पी.ए.यू. वैज्ञानिकों की टीम के किए गए अथक प्रयासों पर प्रकाश डाला। डॉ. अटवाल ने भारत में इटालियन हनी बी की शुरुआत और स्थापना में योगदान दिया। पी.ए.यू. के इस प्रयास ने देश के किसानों और खेतिहार महिलाओं को उद्यमिता स्थापित करने और भारत को शहद का एक बड़ा निर्यातक बनने में मदद करने का मार्ग प्रशस्त किया।

डॉ. गोसल ने किसान पुरुषों व महिलाओं और रक्षाकर्मियों को मधुमक्खी पालन का बुनियादी प्रशिक्षण प्रदान करने और ए.डी.ओ., एच.डी.ओ. और एस.एस.एस. को प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के अलावा राज्य के प्रगतिशील मधुमक्खी-पालकों को अग्रिम प्रशिक्षण प्रदान करने में

इस विस्तृत चर्चा के बाद टीम

ने पी.ए.यू. एपियरी और एपिकल्चरल प्रयोगशालाओं के अतिरिक्त कौट विज्ञान विभाग में राष्ट्रीय कौट संग्रहालय, मधुमक्खी पालन मॉलीक्यूलर जीव विज्ञान प्रयोगशाला और कीटनाशक अवशेष प्रयोगशालाओं की भी दौरा किया।

किसानों को दी सलाह, धान के खेतों से निकाल दें फालतू पानी

अगस्त माह में पंजाब/हरियाणा के अधिकांश हिस्सों में हुई सरप्लस बारिश ने किसानों की चिंताएं बढ़ा दी है। आने वाले दिनों में हल्की बारिश के आसार हैं। ऐसे में किसान अपने खेतों में जमा अतिरिक्त पानी निकाल दें।

पंजाब खेतीबाड़ी यूनिवर्सिटी ने किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की। इसके मुताबिक, धान के खेत में पानी जमा न रखें। तालाब का पानी मिट्टी में समा जाने के दो दिन बाद सिंचाई करें, लेकिन खेतों में दरारें नहीं पड़ने देनी चाहिए। यदि पहले से पानी नहीं दिया गया हो तो नाइट्रोजन की अंतिम खुराक (30 किलोग्राम यूरिया/एकड़.) डाली जा सकती है। पी.आर.-126 जैसी कम अवधि वाली किस्मों में यूरिया की तीसरी खुराक रोपाई के 5 सप्ताह बाद डालें। तना छेदक के कारण 5 प्रतिशत से अधिक मृत तनों वाले खेतों में 60 मिलीलीटर कोराजन 18.5 एस.सी. या 20 मिलीलीटर फेम 480 एस.सी. या 50 ग्राम टाकुमी 20 डब्ल्यू.जी. या 170 ग्राम मोर्टर 75 एस.सी. या 1 लीटर कोरोबन / डर्सबन / लीथल / क्लोरगार्ड / इयरमेट / क्लासिक / फोर्स 20 ई.सी. या 80 मिलीलीटर नीम आधारित जैव-कीटनाशक इकोटिन 100 लीटर पानी में घोल कर प्रति एकड़ में छिड़काव करें। जब कुछेक पौधों पर 5 प्लांट हॉपर पानी में तैरते दिखें तो प्रति एकड़ 100 लीटर पानी में 94 मिलीलीटर पेक्सालोन 10 एस.सी. या 80 ग्राम ओशीन/टोकन 20 एस.जी. (डाइनोटेफ्लूरान) का छिड़काव करें।

बासमती के मामले में सी.एस.आर.-30 में प्रति एकड़ 18 किलो, पंजाब बासमती 7, 5, पूसा बासमती-1121 और 1718 में 36 किलो, पूसा बासमती-1847 और 1509 में 54 किलो यूरिया प्रति एकड़ डालें। यूरिया को दो बराबर भागों में बांटें - रोपाई के 3 सप्ताह और 6 सप्ताह बाद।

खेती दुनिया

द्वारा

किसान भाईयों व डीलर/डिस्ट्रीब्यूटरों के लिए
चंदों में विशेष छूट

एक वर्ष 400/- रुपए

दो वर्ष 700/- रुपए

पेमेंट करने के पश्चात् अपना डाक पता इस नंबर पर भेजें :

90410-14575



चंदे भेजने हेतु QR कोड सकैन करें।